Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
ISSN : 2395-7069, Impact Factor: 7.650, Volume 11, No. 02, April-June, 2025, pp. 177-180

मृदुला गर्ग व चित्रा मुद्गल की रचनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण

प्रेम लता*

सार

मृदुला गर्ग व चित्र मुद्गल हिंदी साहित्य मैं जानी–मानी साहित्यकार हैं। दोनों लेखिकाएं समकालीन हैं। दोनों की अपनी–अपनी विधाएं हैं। चित्रा मुद्गल ने खासतौर से सामाजिक, राजनीतिक मुद्दों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है वही चित्रा मुद्गल ने नारी जीवन को अपनी विषय वस्तु बनाया है। दोनों लेखिकाओं के लेखन व कृतित्व पर उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमियों का भी पर्याप्त प्रभाव दिखाई देता है। अतः यह जरूरी हो जाता है कि दोनों लेखिकाओं के कृतित्व को जानने से पहले उनके व्यक्तिगत जीवन को भी जाना जाए।

शब्दकोशः *मृदुला गर्ग, चित्र मुद्गल, साहित्यकार, राजनीतिक मुद्दे, पारिवारिक पृष्ठभूमि, व्यक्तिगत जीवन।*

प्रस्तावना

मृदुला गर्ग का जन्म 25 अक्टूबर 1938 को कोलकाता,पश्चिम बंगाल के एक संपन्न परिवार में हुआ था। सन् 1960 में अर्थशास्त्र में मास्टर किया। साहित्य में विशेष रुचि के कारण मृदुला गर्ग ने स्कूल के दिनों से ही नाटकों में अभिनय करना शुरू कर दिया था और कई पुरस्कार भी जीते थे। स्त्रीवादी विमर्श में अग्रणी स्थान रखने वाली मृदुला गर्ग ने नई कहानी के दौर के बाद हिंदी कथा साहित्य में भी विशिष्ट पहचान बनाई है। इनकी कहानियों में व्यक्ति से समाज और समाज के बीच की आवाजाही निरंतर नजर आती है। उनके संकलन में संकलित कहानियां भारतीय मन के खुलासे की कहानियां है, जो कहीं अपनी जड़ों से जुड़ने की ललक रखती है, तो कहीं मुखोटो के उतरने की विवशता।

श्रीमती गर्ग समाज सेवा में काफी सक्रिय भूमिका निभाती है, इसलिए इनकी कहानियां समाज का वास्तविक दर्पण बन पड़ी है, यही इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। इन्हें अनेक साहित्य और सामाजिक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। 1938 में जन्मी मृदुला गर्ग आधुनिक हिंदी साहित्य के लेखकों में अत्यंत प्रमुखता से जानी जाती है। इनके अब तक छह उपन्यास, नौ लघु कथा संग्रह, दो नाटक और दो निबंध संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनके अपने दृष्टिकोण के अनुसार, एक महिला के लिए ऐसा कैरियर बनाना व्यर्थ है जो उसकी भक्ति और पारिवारिक जीवन की कीमत पर आता हो।

लगभग 5 दशकों से लेखन जगत में सक्रिय कथाकार सुश्री मृदुला गर्ग का कथा संसार विविधता के अछोर तक फैला हुआ है। उनकी कहानियां मनुष्य के सारे सरोकारों से गहरे तक जुड़ी हुई है। समाज, देश, राजनैतिक माहौल, सामाजिक वर्जनाओ, पर्यावरण से लेकर मानव मन के रेशे रेशे की पड़ताल करती

* सहायक आचार्य, भारतीय पी जी महिला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

नजर आती है। 'हरी बिंदी' स्त्री स्व चेतना की वह कहानी है जहां औरत 'अपने आप'का जश्न स्वयं के साथ मना रही है, यानी 'सेलिब्रेटिंग विद हेरसेल्फ'। एक सुबह जब आंख खुलने पर एहसास होता है कि पति अल सुबह दिल्ली जा चुका है और आज का सारा दिन उसका अपना है, बगैर किसी दखलअंदाजी के। बस फिर क्या, नीले सूट के साथ माथे पर हरी बिंदी सांठ बेतुक से तुक मिलाती मौसम से बेपरवाह निकल पड़ती है, मुंबई की सड़कों पर बिंदास। हरी बिंदी के कंट्रास्ट का प्रतीक उसके निजत्व के रदीफ को कायनात के काफिये से जोड़ उसके अपने होने की तुक को बिठा देता है।

21 बरस बाद 60 साल की औरत सुरभि फिर उसी शहर में, उसी इमारत में, उसी गिरजाघर में डॉक्टर चंद्र के साथ जाती है। यकाएक सुरभि का बाहें फैला डॉक्टर चंद्र को समेटना, डॉ चंद्र का बच्चे की तरह सीने में दुबक जाना और दोनों का एक ही सीढ़ी से वापस लौटना। अद्‌भुत निर्विकार रूप। आत्मीय तीरोधान है। यह वर्जनाएं, परंपराएं सब ध्वस्त। यहां देह का द्वैत नहीं बल्कि विदेह का अद्वैत एकाकार रूप बचा रहता है, जो प्रेम का बहुत ही गहरा चरम– परिपाक है। 60 बरस का परिपक्व अंतराल, स्त्री पुरुष के व्यक्तिगत प्रेम से उठकर एक शाश्वत विश्व प्रेम से जोड़ देता है।

'समागम' की नायिका अपनी युवा बेटी की सन्देहास्पद मृत्यु से व्यग्र, शांति को तलाशती हरिद्वार में हर की पैड़ीं पर ठीक गंगा के सामने जन समूह के साथ भयानक जनरव के बीच सीढियों पर बैठी है। उसे भीड़ में बूढ़े पिता की गोद में अधेड़ बेटे की मौत, और अपनी बेटी को याद करते हुए एक मां का फूट–फूट कर रोना, यह मात्र व्यक्तिगत विलाप नहीं है बल्कि हमारी आधी अधूरी आजादी से सह संबंध बनाता दुख में तब्दील हो जाता है। यह कहानी बहुत ही गहराई से निजी दुख की पड़ताल के बहाने पूरे देश की चरमराती व्यवस्था का भी पोस्टमार्टम करती है।

'बंजर' कहानी के भीतर दर्द की जो पातालगंगा प्रवाहित हो रही है वह एक हद तक असहनीय हो उठती है। मृत्यु के बाद सहानुभूति प्रकट करने वाले लोगों के उपदेश हमें किस हद तक भेद जाते हैं और हम एक थोथी सहानुभूति के बीच फंसकर विडंबना को झेलने के लिए विवश हो जाते हैं। 'शब्द से बड़ा कोई आडंबर नहीं है। कहानी के अंदर आया हुआ यह वाक्य अंदर की वेदना को एक उपदेशात्मक सहानुभूति में तब्दील कर 'मैं' को 'वह' में तब्दील कर देता है। सिर्फ वर्तमान में रहना कितना उत्पीड़क होता है, जब न भविष्य आमंत्रित करें, न अतीत आमंत्रण दे, तो क्षण भर को भी विमुक्ति नहीं होती। यह कहानी बहुत ही गहरी जाकर मानव मन और मानवीय संवेदनाओं की भीतरी बाहरी पड़ताल करती नजर आती है। यह अंदर तक झकझोर देने वाली कहानी है।

चित्रा मुद्‌गल का जन्म 10 सितंबर 1944 को चेन्नई, तमिलनाडु में हुआ था। उच्च शिक्षा मुंबई विश्वविद्यालय में हुई। बकौल चित्रा मुद्‌गल, "विद्रोह, संघर्ष और कायरता, मनुष्य को यह सभी चीज घर के वातावरण से ही मिलती है। मुझे भी घर के माहौल ने विद्रोही बनाया।" संयोग देखिए कि इसी विद्रोह ने चित्रा मुद्‌गल को रचना संसार की राह भी दिखाई पहली कहानी स्त्री पुरुष संबंधों पर थी, जो 1955 में प्रकाशित हुई।

चित्रा मुदगल के लेखन में जहां एक और निरंतर रीति होती जा रही मानवीय संवेदनाओं का चित्रण होता है,वहीं दूसरी और नए जमाने की रफ्तार में फंसी जिंदगी की मजबूरी का चित्रण भी बड़े सलीके से हुआ है। इनके पात्र समाज के निम्न वर्ग के होते हैं और उनकी जिंदगी के समूचे दायरे के अंदर तक घुसकर अध्ययन करते हुए आगे बढ़ते हैं। इनकी रचनाओं में दलित शोषित वर्ग को विशेष स्थान मिला है। चित्रा मुदगल के एक कथा संग्रह में सम्मिलित रचनाओं के बारे में अश्क जी ने 'वर्तमान साहित्य' के महाकथा विशेषांक में विस्तार से लिखते हुए कहानी के शीर्षक में कुछ परिवर्तन का सुझाव दिया तो चित्रा जी ने कहानी संग्रह की भूमिका में अपनी बात इस प्रकार कही थी३३..

"व्यवस्था से लड़ने को तत्पर किशोर मोट्या की लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है, खत्म होगी भी नहीं क्योंकि वह एक ही रूप में नहीं छला जा रहा। उसकी दैहिक और मानसिक भूख की नब्ज उनके हाथों में है और वह जानते हैं कि किस समय उसे किस की भूख हो सकती है और क्या दें, दीखा उसे बहलाया, फुसलाया इस्तेमाल किया जा सकता है।"

चित्रा मुद्गल नए स्त्री विमर्श की कथाकार है। चित्रा मुद्गल की कहानियां अनायास ही पाठकों को अपनी ओर खींचती है। चाहे 'जिनवार' का पात्र असलम हो या फिर 'पाली का आदमी' का किरदार रवि हो। स्त्री को कई कोणों से देखते हुए उसकी स्थिति पर विचार करता है चित्रा जी का कथाकार मन।

'लकड़बग्घा' की 'पछांहवाली' केंचुल की 'कमल' 'भूख' की ' लक्ष्मा', 'नील चौखने वाला कंबल', की 'टिकैतिन। कक्की' तथा प्रेतयोनी की अनीता गुप्ता इस दृष्टि से यादगार चरित्र है। चित्रा मुद्गल की विशेषता यह है कि उनके पात्र जीवन से सीख लेते दिखते हैं। लेखिका ने आम आदमी के जीवन की घटनाओं व छोटी–छोटी स्थितियों को बड़ी खूबी के साथ एक सूत्र में पिरोया है और यही कथाकार की ताजगी है जो अपने पाठकों के साथ संवाद करती दिखती है। चित्रा जी अपने सृजन कार्य में कथा साहित्य को अधिक जोड़ देते हुए आगे बढ़ रही है। उनका मानना है कि अपने चारों ओर फैले अन्याय, शोषण, अत्याचार, अमानवीयता आदि का खुला प्रतिवाद करने के लिए कथा साहित्य ही एक सशक्त माध्यम है। यही कारण है कि उनके कथा साहित्य में व्यवस्था का क्रूर अमानवीय और जन विरोधी चरित्र बार–बार उभरता है।

चित्रा जी कहती है कि मुझे वो कहानियां निश्चय ही अन्य कहानियों की तुलना में अधिक प्रिय और निकट महसूस होती है जो पात्रों को स्वयं अपने मानवीय विचलनों के प्रति सजग करती है। उसकी जड़ चेतन को कुरेदती है। जिनावर सौदा, बाघ, ताशमहल आदि कहानियां इसी श्रेणी में आती है। उनके अनुसार किशोर मानसिकता पर लिखना मेरी रचनाशीलता के लिए सतत चुनौती की भांति रहा है। मेरा यह मानना है कि किसी भी विकासशील राष्ट्र की प्रगति का सही आंतरिक मानचित्र यदि मापना हो तो वहां के समाज की किशोर होती पीढ़ी जो किसी भी देश के उज्जवल भविष्य की संवाहक हुआ करती है, के सपनों को मानदंडों पर रखना होगा।

'त्रिशंकु', 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' और 'बेईमान' कहानी समाज के हाशिए पर फिंके भावनात्मक सुरक्षा और अभावों में जी रहे उन्हें किशोरों के मनोविज्ञान को रुपायित करती कहानियां है। नहीं मालूम कि मैं उन किशोर नायकों के गीले मर्म को कहां तक छू और सहला पाई हूं। मगर जब यह कहानियां 'रविवार' 'सारिका' और 'वर्तमान साहित्य' के अंकों में प्रकाशित हुई तो पाठकों में उमड़ी व्यापक प्रतिक्रिया ने मन को गहराई तकआश्वस्त किया। कुछेक

पाठकों का कहना था– किशोर जीवन के इतने गहरे संस्पर्श हिंदी कहानी में अन्यत्र अनुपलब्ध है।

उन्होंने अनेक पुस्तकों का संपादन किया। उन्होंने दूरदर्शन के लिए वारिस टेलीफिल्म का निर्माण किया। उनका कथा साहित्य आधुनिक युग की समस्याओं जैसे स्त्री पुरुष सम्बंध, पीढ़ी का अन्तर, अकेलेपन, बेरोजगारी और राजनीतिक भ्रष्टाचार को उजागर करता है। उनके लेखन में मानवीय संवेदनाएं, सामाजिक यथार्थ और महिला सशक्तिकरण के मुद्दे प्रधानता लिए हुए हैं।

चित्रा मुद्गल की कहानी अक्सर सामाजिक मुद्दों और मानवीय भावनाओं पर केंद्रित होती है। 'भूख' कहानी भी इसी श्रेणी में आती है, जो पाठकों को गरीबी, लाचारी और मातृत्व के गहरे अर्थों से अवगत कराती है।

चित्रा मुद्गल की यह कहानी एक मार्मिक कहानी है जो भूख से जूझती हुई एक मां की व्यथा को दर्शाती है। यह कहानी एक मां की अपने बच्चों की भूख मिटाने के लिए हर संभव कोशिश और संघर्ष को बयां करती है। चित्रा मुद्गल ने इस कहानी में निम्न वर्ग के लोगों की गरीबी और पीड़ा को बहुत ही

संवेदनशील तरीके से चित्रित किया है। इस कहानी में एक मां अपने बच्चों की भूख से बेबस होकर अपने शरीर को बेचने तक का फैसला कर लेती है। कहानी में चित्रा मुद्गल ने मां के हृदय की पीड़ा और संघर्ष को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। यह कहानी गरीबी, लाचारी और मानवीय भावनाओं के संघर्ष को दर्शाती है। यह कहानी एक मां के अपने बच्चों के लिए प्यार और बलिदान की पराकाष्ठा को भी दिखती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

मृदुला गर्गः
1. कहानी टुकड़ा टुकड़ा, 1977, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. मेरे देश की मिट्टी, 2001, किताब घर प्रकाशन।
3. ग्लेशियर से,1980, प्रभात प्रकाशन।

चित्रा मुद्गलः
1. भूख, 2001, ग्यान गंगा प्रकाशन, दिल्ली
2. मेरी प्रिय कहानियां, 2015, राजपाल एंड संस।
3. दुलहिन, 2023, रेमाधव पब्लिकेशन

❑❑❑